संस्थापक — जहीरुद्दीन बाबर

पिता उमरशेख मिर्जा (चगताई तुर्क)
माता कुतलुग निगार (मंगोल)

11 वर्ष की अवस्था में फरगना का शासक बना
फरगना एवं समरकन्द हाथ से निकल गए (शेल-बाबरनामा)
↳ 1497
↳ अनेक सरदार - शैबानी खां ने अधिकार कर लिया
↳ 1502 में सर-ए-पुल युद्ध (बाबर पराजित)

1504 में काबुल, 1507 में कांधार } विजय की एवं पादशाह उपाधि धारण की

भारत पर आक्रमण।

1519 में बाजौर पर आक्रमण किया और युसुफजाई जातियों को ... में लिया
↳ पहली बार - तोप एवं बंदूक का प्रयोग

बाबर के भारत पर आक्रमण का निमंत्रण → राणा सांगा, दौलत खां लोदी, आलम खां लोदी

1- पानीपत का I युद्ध - 21 April 1526
इब्राहीम लोदी VS बाबर ✓ (विजयी)
[मुस्तफा, अलीकुली] → तोपची थे
युद्ध में तुगुलमा पद्धति का प्रवेश

2- खानवा का युद्ध (16 March 1527)
बाबर VS राणा सांगा
↳ जेहाद का नारा दिया
शराब पर प्रतिबंध
गाजी की उपाधि धारण की

3- चंदेरी का युद्ध → (29 Jan 1528)
बाबर VS मेदनी राय
में राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया।

4- घाघरा का युद्ध → बाबर VS बंगाल बिहार की संयुक्त सेना।
(5 May 1529)
जल एवं थल दोनों पर लड़ा गया

→ आराम बाग से दफनाया गया बाद में काबुल में
→ फारसी की कविता की नई शैली मुबईयान का विकास किया

लेयडन, ईर्स्किन — तुजुक-ए-बाबरी, आत्मकथा - फारसी अनुवाद → अब्दुर्रहीम खान खाना। जहाँ खां
दीवान शीर्षक से तुर्की भाषा में कविता संग्रह

फारूकी सिक्का
बाबरी सिक्का

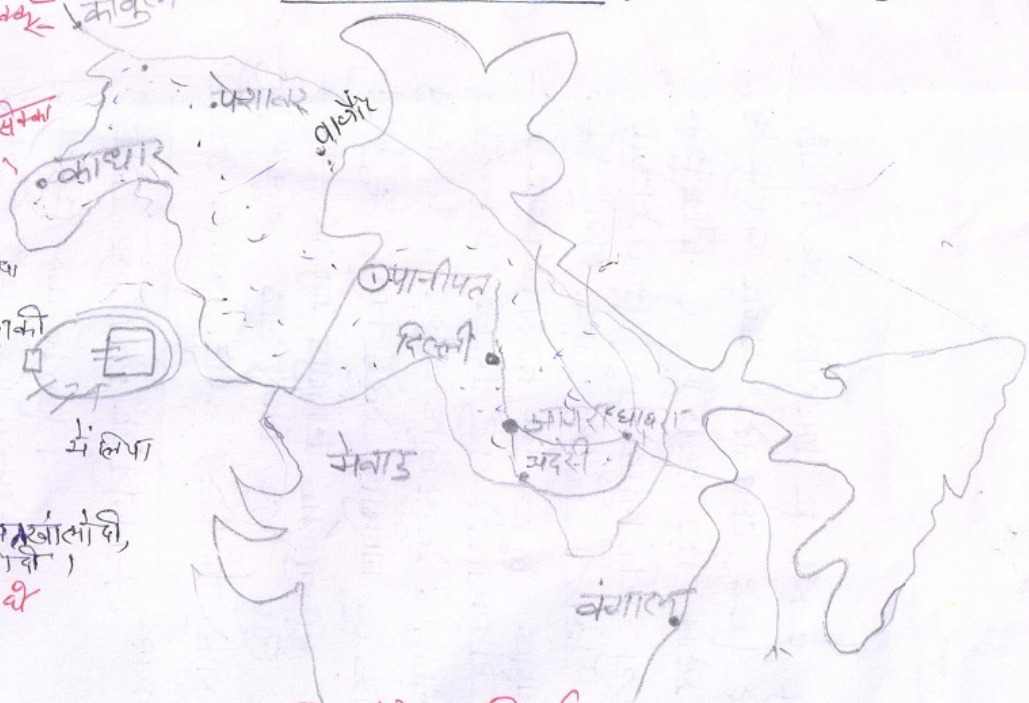

[बगीचों का निर्माण
जामा मस्जिद (संभल)
काबुली मस्जिद (पानीपत)
गज-ए-बाबरी - सड़कों का विकास]

धन बांटने के कारण कलंदर कहलाता है।

लेयडन, ईर्स्किन, किंग } इंग्लिश में अनुवाद

मुगल साम्राज्य (1526-1707)

बाबर (1526-1530) →

14 फरवरी, 1483 को फरगना में 'जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर' का जन्म हुआ। यह अपने पिता की ओर से तैमूर का पाँचवा वंशज एवं माता की ओर से चंगेज (मंगोल नेता) का चौदहवां वंशज था। इस का परिवार तुर्की जाति के चगताई वंश के अन्तर्गत आता था। बाबर अपने पिता 'उमरशेख मिर्जा' की मृत्यु के बाद ग्यारह वर्ष की अल्पायु में लगभग 1494 में भावरा उन्नहर की एक छोटी सी रियासत फरगना का शासक बना। बाबर ने अपना राज्याभिषेक अपनी दादी 'ऐसान दौलत बेगम' के सहयोग से करवाया।

बाबर ने अपने फरगाना के शासन काल में 1501 में समरकन्द पर अधिकार किया जो मात्र आठ महीने उसके कब्जे में रहा। 1504 में बाबर ने काबुल पर अधिकार कर लिया। 1507 में बाबर ने अपने पूर्वजों द्वारा धारण की गई उपाधि 'मिर्जा' का त्याग कर नई उपाधि 'पादशाह' धारण की।

बाबर की भारत पर विजय → बाबर का भारत के विरुद्ध किया गया प्रथम अभियान 1519 में यूसुफजई जाति के विरुद्ध था। इस अभियान में बाबर ने 'बाजौर' और 'भेरा' को अपने अधिकार में किया। यह बाबर का प्रथम भारतीय अभियान था जिसमें उसने तोपखाने का प्रयोग किया था। 1519 के अपने दूसरे अभियान में बाबर ने 'पेशावर' पर अधिकार कर लिया। 1520 के अपने तीसरे अभियान में बाबर ने 'बाजौर' एवं भेरा को पुनः जीता, साथ ही 'स्यालकोट' एवं 'सैय्यदपुर' को भी अधिकार कर लिया। 1524 के चौथे अभियान के अन्तर्गत इब्राहिम लोदी एवं दौलत खां के मध्य मतभेद हो जाने के कारण दौलत खां 'गवर्नर लाहौर' ने अपने पुत्र 'दिलावर खां' एवं 'आलम खां' (बहलोल लोदी का पुत्र) को बाबर को भारत पर आक्रमण हेतु आमंत्रित करने के लिए भेजा। सम्भवतः इसी समय 'राणा संगा' ने भी बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए निमंत्रण दिया।

बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित करने के पीछे सम्भवतः निम्न कारण इस प्रकार थे।

→ दौलत खां पंजाब पर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखना चाहता था
→ आलम खां किसी तरह दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करना चाहता था।
→ राणा सांगा सम्भवतः बाबर के द्वारा अफगानों की शक्ति को नष्ट करवा कर खुद दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था।

अपने चौथे अभियान 1524 में बाबर ने लाहौर एवं दीपालपुर पर अधिकार कर लिया।

नवम्बर 1526 में बाबर द्वारा किये गये पांचवे अभियान में जिसमें बदख्शाँ से एक सैनिक टुकड़ी के साथ बाबर का पुत्र हुमायूँ भी आ गया था, सर्वप्रथम दौलत खाँ को समर्पण के लिए विवश कर बन्दी बनाकर भेरा नगर भेज दिया गया, शीघ्र ही आलम खां ने भी आत्मसमर्पण कर दिया। इस तरह पूरा पंजाब बाबर के कब्जे में आ गया।

पानीपत का प्रथम युद्ध, कारण एवं परिणाम →

यह युद्ध सम्भवतः बाबर की महत्वाकांक्षी योजनाओं की अभिव्यक्ति थी। यह युद्ध दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी एवं बाबर के मध्य लड़ा गया। 12 अप्रैल 1526 को दोनों सेनाये पानीपत के मैदान में आमने-सामने हुई पर दोनों के मध्य युद्ध का आरम्भ 21 अप्रैल को हुआ। ऐसा माना जाता है इस युद्ध का निर्णय दोपहर तक हो गया। युद्ध में इब्राहिम लोदी बुरी तरह परास्त होने के साथ ही मार दिया गया। बाबर ने अपनी कृति 'बाबरनामा' में इस युद्ध को जीतने में मात्र 12000 सैनिकों के उपयोग का जिक्र किया है पर इस विषय पर इतिहासकारों में मतभेद है। इस युद्ध में बाबर से पहली बार प्रसिद्ध 'तुलगमा युद्ध नीति' एवं तोपखाने का प्रयोग किया। पानीपत के युद्ध में ही बाबर ने अपने दो प्रसिद्ध निशानेबाज उस्ताद अली एवं मुस्तफा की

सेवायें ली। इस युद्ध में लूटे गये धन को बाबर ने अपने सैनिक अधिकारियों, नौकरों एवं सगे सम्बन्धियों में बांटा। सम्भवतः इस बंटवारे में हुमायूँ को वह कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ जिसे उसने ग्वालियर नरेश 'राजा विक्रमाजीत' से छीना था। इस हीरे की कीमत के बारे में माना जाता है कि इसके मूल्य द्वारा पूरे संसार का आधे दिन का खर्च पूरा किया जा सकता था। भारत विजय के ही उपलक्ष्य में बाबर ने प्रत्येक काबुल निवासी को एक-एक चांदी के सिक्के उपहार में दिये। अपनी इसी उदारता के कारण उसे 'कलन्दर' की उपाधि दी गई।

इब्राहिम लोदी की पराजय व बाबर की विजय के कारण

→ बाबर का व्यक्तित्व,
→ बाबर के योग्य सेनापति
→ मुगल सेना का रण कौशल
→ बारूद का प्रयोग
→ बाबर का कुशल सैन्य संचालन व व्यूह रचना
→ अनेक अफगानों का बाबर के साथ होना
→ अफगानों का नैतिक पतन

खानवा का युद्ध (17 मार्च, 1527)

यह युद्ध बाबर एवं मेवाड़ के राणा सांगा के मध्य लड़ा गया। इस युद्ध के कारणों के विषय में इतिहासकारों के अनेक मत हैं। कुछ का मानना है कि चूँकि पानीपत के युद्ध के पूर्व बाबर एवं राणा सांगा में हुए समझौते के तहत इब्राहिम के खिलाफ सांगा को बाबर के सैन्य अभियान में सहायता करनी थी, जिससे राणा सांगा बाद में मुकर गया।
→ दूसरा सांगा बाबर को दिल्ली का बादशाह नहीं मानता। इन दोनों ही कारणों से अलग कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह युद्ध बाबर एवं राणा सांगा की महत्वाकांक्षी योजनाओं का परिणाम था।

बाबर सम्पूर्ण भारत को रौंदना चाहता था, राणा सांगा तुर्क अफगान राज्य के खण्डहरों के अवशेष पर एक हिन्दू राज्य की स्थापना करना चाहता था परिणाम स्वरूप दोनों सेनाओं के मध्य 17 मार्च 1527 से युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध में राणा सांगा का साथ मारवाड़, अम्बर, ग्वालियर, अजमेर, हसन खाँ मेवाती, बसीन चंदेरी एवं इब्राहिम का भाई महमूद लोदी दे रहे थे। युद्ध में राणा के संयुक्त मोर्चे की खबर से बाबर के सैनिकों का मनोबल गिरने लगा। बाबर अपने सैनिकों के उत्साह को बढ़ाने के लिए शराब पीने और बेचने पर प्रतिबन्ध की घोषणा कर शराब के सभी पात्रों को तुड़वा कर शराब न पीने की कसम ली, इसने 'तमगाकर' मुसलमानों से न लेने की घोषणा की, साथ ही राणा सांगा के विरुद्ध 'जिहाद' का नारा दिया। इस तरह खानवा के युद्ध में भी बाबर ने पानीपत युद्ध की रणनीति का उपयोग करते हुए सांगा के विरुद्ध सफलता प्राप्त की। युद्ध क्षेत्र में राणा सांगा, पर किसी तरह अपने सहयोगियों द्वारा बच निकला, कालान्तर में अपने किसी सामन्त द्वारा जहर दिये जाने के कारण इसकी मृत्यु हो गई। खानवा के युद्ध को जीतने के बाद बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की।

इस युद्ध के उपरान्त बाबर के घुमक्कड़ एवं अस्थिर जीवन में स्थिरता आ गयी।

→ 29 जनवरी 1528 को बाबर ने 'चंदेरी के युद्ध' में वहाँ के सूबेदार मेदिनी राय को परास्त किया। 6 मई 1529 को बाबर ने 'घाघरा के युद्ध' में बंगाल एवं बिहार की संयुक्त सेना को परास्त किया परिणामस्वरूप बाबर का साम्राज्य औक्सस से घाघरा एवं हिमालय से ग्वालियर तक पहुँच गया।

करीब 48 वर्ष की आयु में 27 दिसम्बर 1530 को बाबर की आगरे में मृत्यु हो गई। प्रारम्भ में इसके शव को आगरे के आराम बाग में रखा गया पर अंतिम रूप से काबुल के एक मनोहर स्थान पर दफना दिया गया।

बाबर की उपलब्धियाँ :-> सम्भवत: बाबर कुषाणों के बाद पहला शासक था जिसने काबुल एवं कंधार को अपने पूर्ण नियंत्रण में रखा। इसने भारत में अफगान एवं राजपूतों की शक्ति को समाप्त कर 'मुगल साम्राज्य' की स्थापना की जो करीब पौने दो सौ वर्षों तक जीवित रहा। बाबर ने भारत पर एक आक्रमण कर एक नई युद्ध नीति का प्रचलन किया।

बाबर योग्य शासक होने के साथ ही तुर्की भाषा का विद्वान था। इसने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' की रचना की, जिसका अनुवाद बाद में फारसी भाषा में 'अब्दुलरहीम खानखाना' ने किया। इसके अतिरिक्त बाबर को 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का भी जन्मदाता माना जाता है।

इतिहासकार 'स्मिथ' के अनुसार, बाबर अपने युग के एशियाई शासकों में सबसे अधिक प्रतिभाशाली बताया एवं किसी देश तथा काल में सम्राटों में उच्च पद पाने योग्य बताया'। 'रशब्रुक' ने तो एक व्यक्ति एवं शासक के रूप में उसकी भूरि-२ प्रशंसा की। 'इलियट' ने कहा कि 'प्रसन्न चित्त, वीर, महान, विचारशील तथा निष्पक्ष व्यक्तित्व के कारण यदि बाबर का पालन-पोषण एवं प्रशिक्षण इंग्लैण्ड में होता तो अवश्य ही वह हेनरी चतुर्थ होता।

7

हुमायूँ

↳ राज्याभिषेक – 30 Dec 1530 (आगरा)

तीरंदाजी एवं घुड़सवारी में निपुण।

12 वर्ष की अवस्था में बदख्शा का प्रशासक नियुक्त।

प्रारम्भिक कठिनाइयाँ –

(1) असंगठित सेना (2) साम्राज्य विभाजन (3) रिक्त कोष और अफगान

कामरान	अस्करी	हिंदाल	मिर्जा सुलेमान (चचेरा भाई)
काबुल कंधार	सम्भल	अलवर	बदख्शाँ

प्रथम युद्ध – कालिंजर पर आक्रमण – 1531

हुमायूँ vs प्रतापरुद्रदेव [संधि हुयी]

कामरान के पंजाब में अतिक्रमण एवं अफगान समस्या

दोहरिया का युद्ध – (1532)
हुमायूँ vs महमूद लोदी (विजयी)
] जौनपुर अफगानों के अधिकार करने के कारण युद्ध हुआ।

चुनार का घेरा – (1532)

शेरखां vs हुमायूँ (समझौता)

गुजरात के शासक बहादुरशाह से संघर्ष (1535-36)

बहादुरशाह पराजित

मांडू एवं चम्पानेर की विजय हुमायूँ ने की।

शेर खां से संघर्ष – (1537-40)

शेरखां ने बंगाल विजय की
↳ तो हुमायूँ ने चुनार दुर्ग जीत लिया

हुमायूँ ने बंगाल विजित किया
↳ वापसी में शेरखां ने आगरा मार्ग अवरुद्ध किया

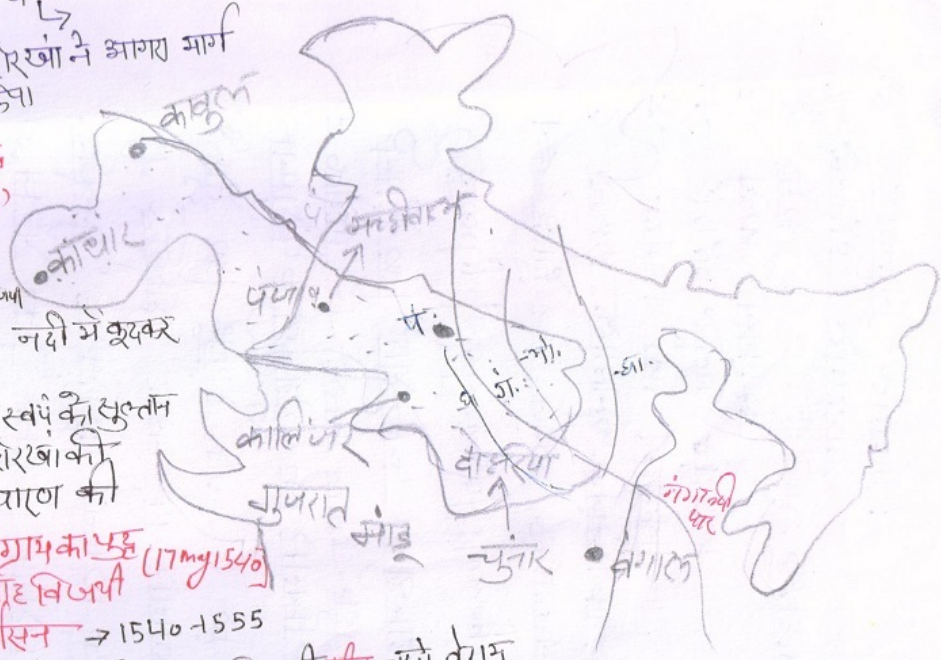

चौसा का युद्ध (26 June 1539)

↓

हुमायूँ vs शेरखां ✓ विजयी

↳ हुमायूँ नदी में कूदकर जान बचाई

↳ शेरखां ने स्वयं को सुल्तान घोषित कर शेरखां की उपाधि धारण की

कन्नौज / बिलग्राम का युद्ध (17 May 1540)
↳ शेरशाह विजयी

हुमायूँ का निर्वासन → 1540 – 1555

हिन्दाल के गुरु मीर अली अकबर की पुत्री हमीदा बानो बेगम से विवाह किया

↓

अकबर का जन्म (अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में)

हुमायूँ कंधार से ईरान चला गया ↓ (जीजी अंगा, माहम अनगा एवं के संरक्षण में)

शाह तहमास्प ने स्वागत किया।

शाह तहमास्प की मृत्यु { कंधार विजय / काबुल विजय

→ मच्छीवाड़ा का युद्ध 15 मई 1555 अफगान पराजित

सरहिन्द का युद्ध – 22 June 1555

↳ हुमायूँ vs सिकन्दर सूर
↳ पराजित

24 Jan 1556 में पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर

24 Jan 1556 को मृत्यु। पत्नी हाजी बेगम ने दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा बनवाया

हुमायूँ (1530-1556)

'नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ' का जन्म बाबर की पत्नी 'माहम अनगा' के गर्भ से 6 मार्च 1508 को काबुल में हुआ। बाबर के 4 पुत्रों हुमायूँ, कामरान, अस्करी, हिन्दाल में हुमायूँ सबसे बड़ा था, बाबर ने इसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। भारत में राज्याभिषेक के पूर्व 1520 में 12 वर्ष की अल्पायु में उसे बदख्शाँ का सूबेदार नियुक्त किया। बदख्शाँ के सूबेदार के रूप में हुमायूँ ने भारत के उन सभी अभियानों में भाग जिनका नेतृत्व बाबर ने किया। 1529 में हुमायूँ बदख्शाँ की सूबेदारी त्याग कर आगरा आ गया, जहाँ पर बाबर की मृत्यु के बाद 30 दिसम्बर 1530 को 23 वर्ष की आयु में हुमायूँ का राज्याभिषेक किया गया। बाबर द्वारा हुमायूँ को दिया गया यह निर्देश कि वह अपने छोटे भाइयों के साथ उदारता का व्यवहार करे, हुमायूँ ने कामरान काबुल, कन्धार एवं पंजाब की सूबेदारी, अस्करी को सम्भल की सूबेदारी एवं हिन्दाल को अलवर की सूबेदारी प्रदान की साम्राज्य का इस तरह से किया गया विभाजन हुमायूँ की भयंकर भूलों में से एक था जिसके कारण उसे अनेक आन्तरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और कालान्तर में हुमायूँ के भाइयों ने उसका साथ नहीं दिया।

हुमायूँ की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ
(Early problems of Humayun)

1⇒ हुमायूँ का विशाल साम्राज्य
2- सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था का अभाव
3- साम्राज्य का विभाजन
4- दोषपूर्ण सैन्य संगठन
5- रिक्त खजाना
6- बाबर के सम्बन्धियों का षड्यन्त्र
7- अफगान समस्या
8- अफगान समस्या।

हुमायूँ का सैन्य अभियान :->

कालिंजर पर आक्रमण (1532) -> हुमायूँ को कालिंजर अभियान, गुजरात के शासक बहादुर शाह की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए करना पड़ा। कालिंजर के किले पर आक्रमण के समय ही इसे यह सूचना मिली कि अफगान सरदार महमूद लोदी बिहार से जौनपुर की ओर बढ़ रहा है और उसे किले का घेरा उठाकर जौनपुर की ओर मुड़ना पड़ा।

दोहरिया का युद्ध (1532) :-> जौनपुर की ओर अग्रसर हुमायूँ की सेना एवं महमूद लोदी की सेना के बीच अगस्त 1532 में दोहरिया नामक स्थान पर संघर्ष हुआ जिसमें महमूद की पराजय हुई।

चुनार का घेरा (1532) हुमायूँ के चुनार के किले पर आक्रमण के समय यह किला अफगान नायक शेर खाँ के कब्जे में था 4 महीने लगातार किले को घेरे रहने के बाद 'शेरखां' एवं हुमायूँ में एक समझौता हो गया। समझौते के अन्तर्गत शेरखां ने हुमायूँ की अधीनता स्वीकार करते हुए अपने पुत्र 'कुतुब खाँ' को एक अफगान सैनिक टुकड़ी के साथ हुमायूँ की सेवा में भेजना स्वीकार कर लिया बदले में चुनार का किला शेरखां के अधिकार में छोड़ दिया गया। हुमायूँ का शेरखां को बिना पराजित किये छोड़ देना उसकी एक और भूल थी। इस सुनहरे मौके का फायदा उठाकर शेरखां ने अपनी शक्ति एवं संसाधनों में वृद्धि कर लिया। दूसरी तरफ हुमायूँ ने इस बीच अपने धन का अपव्यय किया।

1533 में हुमायूँ ने दिल्ली में 'दीनपनाह' नाम का एक विशाल दुर्ग का निर्माण करवाया, जिसका उद्देश्य था मित्र एवं शत्रु को प्रभावित किया करना।

1534 में बिहार में मु० जमान मिर्जा एवं मु० सुल्तान मिर्जा के विद्रोह को हुमायूँ ने सफलता से दबाया।

बहादुर शाह से युद्ध (1535-36) :-> गुजरात के शासक बहादुर शाह ने 1531 में मालवा तथा 1532 में 'रायसेन' के किले पर अधिकार कर लिया। 1534 में इसने चित्तौड़ पर आक्रमण कर संधि के लिए बाध्य किया। बहादुर शाह ने तुर्की के कुशल तोपची 'रूमी खाँ' की सहायता से एक बेहतर तोपखाने का निर्माण करवाया। दूसरी तरफ शेरखाँ ने 'सूरजगढ़ के युद्ध में' बंगाल को हरा कर काफी सम्मान अर्जित कर लिया। इसकी बढ़ती हुई शक्ति हुमायूँ के लिए चिन्ता का विषय थी। पर हुमायूँ की पहली समस्या बहादुर शाह था। बहादुर शाह एवं हुमायूँ के मध्य 1535 में 'सारंगपुर' में संघर्ष हुआ। बहादुर शाह पराजित होकर मांडू भाग गया। इस तरह हुमायूँ द्वारा मांडू एवं चम्पानेर पर विजय के बाद मालवा एवं गुजरात उसके अधिकार में आ गया। एक वर्ष बाद शाह ने पुर्तगालियों के सहयोग से पुनः 1536 में गुजरात एवं मालवा पर अधिकार कर लिया, परन्तु फरवरी 1537 में बहादुरशाह की मृत्यु हो गई।

शेरखाँ से संघर्ष (अक्तूबर 1537 से जून 1540) :-> 1537 के अक्तूबर महीने में हुमायूँ ने पुनः चुनार के किले पर घेरा डाला। शेरखाँ के पुत्र कुतुब ने हुमायूँ को करीब छः महीने तक किले पर अधिकार नहीं करने दिया। अन्ततः हुमायूँ ने कूटनीति एवं तोपखाने के प्रयोग से किले पर कब्जा कर लिया। इन छः महीनों का उपयोग शेरखाँ ने बंगाल अभियान में सफलता प्राप्त कर गौड़ के अधिकांश खजाने को रोहतास के किले में जमा कर लिया।

चुनार की सफलता के बाद हुमायूँ ने बंगाल पर विजय प्राप्त की। वह गौड़ में करीब 1539 तक रहा। 15 अगस्त 1538 को जब हुमायूँ ने बंगाल के गौड़ क्षेत्र में प्रवेश किया तो उसे वहाँ पर चारों ओर उजाड़ एवं लाशों का ढेर दिखाई पड़ा। हुमायूँ ने इस स्थान का पुनर्निर्माण कर इसका नाम 'जन्नताबाद' रखा।

चौसा का युद्ध :-> 26 जून 1539 को हुमायूँ एवं शेरखाँ की सेनाओं के मध्य गंगा नदी के उत्तरी तट पर स्थित चौसा नामक स्थान पर संघर्ष हुआ। यह युद्ध हुमायूँ अपनी कुछ गलतियों के कारण हार गया। संघर्ष में मुगल सेना की काफी तबाही हुई। हुमायूँ ने युद्ध क्षेत्र से भाग कर एक भिश्ती का सहारा लेकर किसी तरह गंगा नदी को पार कर अपनी जान बचाई।

चौसा के युद्ध में सफल होने के बाद शेरखां ने अपने को शेरशाह की उपाधि से सुसज्जित किया, साथ ही अपने नाम के खुतबे पढ़वाने एवं सिक्के ढलवाने का आदेश दिया।

बिलग्राम की लड़ाई (17 मई 1540) बिलग्राम व कन्नौज में लड़ी गई इस लड़ाई में हुमायूँ के साथ उसके भाई हिन्दाल एवं असकरी भी थे, फिर भी पराजय ने हुमायूँ का पीछा नहीं छोड़ा। इस युद्ध की सफलता के बाद शेरखां ने सरलता से आगरा एवं दिल्ली पर कब्जा कर लिया, इस तरह हिन्दुस्तान की राजसत्ता एक बार पुनः अफगानों के हाथ में आ गई।

इस तरह शेरशाह से परास्त होने के उपरान्त हुमायूँ सिंध चला गया, जहाँ उसने करीब 15 वर्ष तक घुमक्कड़ी जैसा निर्वासित जीवन व्यतीत किया। इस निर्वासन के समय ही हुमायूँ ने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरू फारसवासी 'शिया मीर बाबा दोस्त' उर्फ 'मीर अली अकबर जामी' की पुत्री हमीदा बानू बेगम से 29 अगस्त 1541 को निकाह कर लिया, कालान्तर में हमीदा से ही अकबर जैसे महान सम्राट का जन्म हुआ।

हुमायूँ द्वारा पुनः राज्य की प्राप्ति ⇒ 1545 में हुमायूं ने कंधार एवं काबुल पर अधिकार कर लिया। शेरशाह के पुत्र 'इस्लामशाह' की मृत्यु के बाद हुमायूँ को हिन्दुस्तान पर अधिकार का पुनः अवसर मिला। 5 सितम्बर 1554 में हुमायूँ अपनी सेना के साथ 'पेशावर' पहुँचा; फरवरी 1555 में हुमायूँ ने लाहौर पर कब्जा कर लिया।

मच्छीवारा का युद्ध (15 मई 1555) अम्बियाला से करीब 19 मील पूर्व में सतलज नदी के किनारे स्थित मच्छीवारा स्थान पर हुमायूँ एवं अफगान सरदार 'नसीब खां' एवं 'तातार खां' के बीच संघर्ष हुआ। संघर्ष का परिणाम हुमायूँ के पक्ष में रहा। सम्पूर्ण पंजाब मुगलों के अधिकार में आ गया।

सरहिन्द का युद्ध (22 जून 1555) ⇒ इस संघर्ष में अफगान सेना का नेतृत्व 'सुल्तान सिकन्दर सूर' एवं मुगल सेना का नेतृत्व 'बैरम खां' ने किया, अफगान पराजित हुये।

23 जुलाई 1555 को शुभ क्षणों में एक बार पुनः दिल्ली के तख्त पर हुमायूँ को बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परन्तु उसका दुर्भाग्य था कि वह अधिक दिनों तक सत्ता भोग नहीं कर सका। जनवरी 1556 में 'दीन पनाह' भवन में स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।

हुमायूँ के बारे में इतिहासकार 'लेनपूल' ने कहा कि 'हुमायूँ गिरते पड़ते इस जीवन से मुक्त हो गया, ठीक उसी तरह जिस तरह तमाम जिन्दगी वह गिरते-पड़ते चलता रहा था।

ज्योतिष में चूँकि हुमायूँ विश्वास करता था, इसलिए इसने सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाये। वह मुख्यतः इतवार को पीला, शनिवार को काला एवं सोमवार को सफेद कपड़े पहनता था।

—×—×—×—